अध्याय– प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 संक्रियात्मक परिभाषा

1.3 अनुसंधान का महत्व एवं आवश्यकता

1.4 अनुसंधान के उद्देश्य

1.6 परिकल्पना

1.7 शोध समस्या की सीमाएँ

अध्याय प्रथम

प्रस्तावना

1.1 प्रस्तावना –

परिवार का व्यक्ति के जीवन तथा व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसमें व्यक्ति का स्वास्थ्य, शीलगुण एवं समायोजन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति परिवार में ही समय व्यतीत करता है। परिवार के सदस्यों का व्यक्ति के व्यवहार पर काफी नियंत्रण होता है तथा परिवार के सदस्यों के बीच काफी संवेगात्मक संबंध मजबूत होते है। परिवार का व्यक्ति के शारीरिक विकास एवं मानसिक विकास पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूप से प्रभाव पड़ता है।

परिवार के कुछ खास पहलू में से क्रमसूचक स्थान का व्यक्ति के विकास पर प्रभाव पड़ता है। क्रमसूचक स्थान का तात्पर्य परिवार में माता–पिता को जब संतान पैदा होते है। वह संतान एक या एक से ज्यादा होता है। उनका जन्म लेने का क्रम को जन्मक्रम कहा है। यह जन्मक्रम का व्यक्ति के शीलगुण जैसे स्वालंबन, परावलंबन, वर्चस्ववृत्ति, आक्रमकता, दयालू आदि गुणों पर प्रभाव पड़ता है।

परिवार में अपने जन्मक्रम के अनुरूप प्रत्येक बच्चा द्वारा की गयी भूमिका का प्रभाव उसके जीवन शैली पर पड़ता है। इतना ही नहीं, परिवार के अन्य सदस्य उससे क्या उम्मीद करते है या किस तरह की भूमिका या कार्य करने की उम्मीद करते हैं। इस कारण से बच्चे के व्यवहार में परिवर्तन आता है। इस प्रत्याशाओं के अनुरूप अपने आप को मोड़कर बच्चे अपने में परिवर्तन लाता है तथा महत्वपूर्ण समायोजन करता

है। जब बच्चे परिवार में समरूपता दिखाने में असमर्थ होते हैं, तो उसमें चिन्ता, द्वेष आक्रमकता तथा असमायोजन हो जाता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि जन्मक्रम व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय को दो तरह से प्रभावित करता है। पहला तो यह कि विभिन्न जन्मक्रमों के कारण भाई एवं बहनों में प्रतियोगिता का भाव उत्पन्न हो जाता है जो उनके घर के वातावरण को प्रभावित करता है तथा दूसरा यह कि सामाजिक प्रत्याशाओं के संदर्भ में व्यक्ति अन्य लोगों द्वारा किस तरह से प्रत्यक्षण किया जाता है। जैसे यदि अंतिम जन्मक्रम वाला बच्चा परिवार में यह देखता है कि उसे पहला जन्मक्रम वाला बच्चा की तुलना में हीन समझा जाता है या फिर कम महत्व दिया जाता है तो इससे उसका प्रथम जन्मक्रम वाला बच्चा से संबंध तो खराब होगा ही साथ ही साथ माता–पिता के प्रति भी विद्वेष उत्पन्न होगा। परन्तु यदि वह प्रथम जन्मक्रम वाला बच्चा के समान ही व्यवहार अपने प्रति भी माता–पिता द्वारा करते देखता है, तो इससे माता–पिता के प्रति स्नेह एवं प्रथम जन्मक्रम वाला बच्चा के साथ सहयोग करने की भावना का जन्म होता है।

विभिन्न जन्मक्रम के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर होगा? इसके साथ समायोजन करने में विभिन्नता आती होगी। क्या लड़के एवं लड़कियों में शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में अंतर है? शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में क्या सहसंबंध है। आदि प्रश्न हल करने के लिए यह अनुसंधान महत्वपूर्ण है। इसके साथ पाठशाला में पढ़ा रहे पाठ्यक्रम बच्चों में परिवर्तन लाता है। क्या उनकी उपलब्धि बढ़ाने के लिए किए गये प्रयासों से बच्चे घर, समाज एवं स्कूल में ठीक तरह समायोजन करते है? यह जानने की इच्छा निम्न अध्ययन से हुई।

वर्ष 1975 के बाद पाठ्यचर्या संबंधी कार्य को जारी रखते हुए परिषद ने कुछ अध्ययन किए व परामर्श दिए और अपनी गतिविधियों के एक भाग के रूप में वर्ष 1984 में पाठ्यचर्या की एक रूपरेखा भी तैयार की। इस गतिविधि का उददेश्य था पूरे देश में गुणवत्ता के स्तर पर स्कूली शिक्षा को तुलनीय अर्थात लगभग समान बनाना तथा देश की विविधता पर समझौता न करते हुए शिक्षा को राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनाना। ऐसे ही अनुभव पर आधारित परिषद के कार्य को अंततः परिणति हुई शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 1988 के रूप में बहरहाल, एक तेजी से बदलते विकासशील संदर्भ में अध्ययन के विषयों पर पाठ्यपुस्तकों के जरिए इस रूपरेखा का परिणाम यह हुआ कि "पाठ्यचर्या का बोझ" बढ़ गया और स्कूली पढ़ाई बाल्यावस्था व किशोरावस्था के निर्माणात्मक वर्ष में उनके शरीर व मस्तिष्क पर तनाव का स्त्रोत बन गई। प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में गठित समिति की रिपोर्ट जिसका शीर्षक था "लर्निंग विदाऊट बर्डन" (शिक्षा बिना बोझ की) जिसमें बच्चे शिक्षा के साथ अच्छी तरह समायोजन कर सके।

1.2 संक्रियात्मक परिभाषाः–

शोधकर्ता यहाँ अध्ययन में सम्मिलित होने वाले सभी चरों को संक्रियात्मक ढ़ंग से परिभाषित करता है। इन परिभाषाओं से शोधकर्ता का अपना दृष्टिकोण स्पष्ट होता है तथा शोध का मूल्याकंन करने में सहायता मिलती है।

1. जन्मक्रम –

"परिवार में माता–पिता को जब संतान पैदा होते है उनका जन्म लेने का क्रम को जन्मक्रम कहा है।" उदा. प्रथम जन्मक्रम याने पहला जन्मलेने वाला बालक –बालिका।

2. शैक्षिक उपलब्धि –

"शैक्षिक उपलब्धि यह है कि उनका मूल्यांकन का मुख्य उददेश्य यह है कि छात्र ने किस अंश तक विद्यालय द्वारा निश्चित किये गये उददेश्यों को प्राप्त कर लिया है। उनकी जानकारी लेना है वह जानकारी परीक्षा पद्धति से आंकड़े, मात्रा एवं श्रेणी में व्यक्त की जाती है।

3. समायोजन –

"समायोजन वह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी अवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है। ऐसी एक मानसिक प्रक्रिया है।"

1.3 अनुसंधान का महत्व एवं आवश्यकता :–

कोई भी कार्य मन से किया हुआ विफल नहीं होता, ज्ञान के लिए ज्ञान या जीवन के लिए ज्ञान दोनों का तात्पर्य ज्ञान का लाभ होता ही है। आज भारत में कुटुम्ब नियोजन करना महत्वपूर्ण हुआ है। कुटूम्ब में जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या कम हुई है। हम बच्चों को शिक्षा देने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। उनका लालन–पालन कर रहे हैं। उनकों देनेवाली शिक्षा में संवेगात्मक तथा समाज में बच्चें अच्छी तरह समायोजन कर पाते या नहीं ? जन्मक्रम का शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन से क्या संबंध है। क्या लड़के–लड़कियों में शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन करने में भेद पाया जाता है? कौन से जन्मक्रम के बच्चों में शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन अच्छा है? आदि प्रश्न हल करने के लिए यह अनुसंधान महत्वपूर्ण है।

1.4 अनुसंधान के उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों का जन्मक्रम ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. जन्मक्रम एवं शैक्षिक उपलब्धि में अंतर जानना।
4. विद्यार्थियों का समायोजन ज्ञात करना।
5. जन्मक्रम एवं समायोजन का अंतर जानना।
6. शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का संबंध जानना।
7. जन्मक्रम के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का संबंध जानना।

1.5 परिकल्पनाः–

1. जन्मक्रम और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. जन्मक्रम और समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
4. लिंग के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. लिंग के अनुसार समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.6 शोध समस्या की सीमाएँः–

किसी भी प्रकार की अनुसंधान की रूपरेखा तैयार करते समय उसकी सीमाओं का निर्धारण कर लेना चाहिये। क्योंकि यदि सीमाओं का निर्धारण नहीं किया गया तो अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्षो का सामान्यीकरण करने में कठिनाई आयेगी और पूरा अध्ययन कई स्थानों पर बिखरा-बिखरा दृष्टिगत होगा। सीमाओं का निर्धारण न होने पर अध्ययन पर नियंत्रण स्थापित करने में परेशानी का अनुभव होगा। अतः इस अध्ययन के लिये भी शोधकर्ता ने कुछ सीमाओं का निर्धारण किया है जो निम्नलिखित है :–

1. प्रस्तुत अनुसंधान महाराष्ट्र के बीड़ जिले के वडवणी तहसील क्षेत्रों में निहीत है।
2. कक्षा 8वीं के छात्र जिनकी आयु 12 से 14 होगी ऐसे छात्रों का चयन किया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन के लिये जो छात्र 7वीं कक्षा में सरकारी तथा बोर्ड परीक्षा पास हुए ऐसे छात्रों का चुनाव किया गया है।
4. जन्मक्रम में जिस परिवार में केवल तीन ही बच्चे है ऐसे बच्चे का चयन किया है। अकेला या दो या चार से अधिक बच्चों का जन्मक्रम है, वह बच्चे को नियंत्रित किया गया है।